विश्व हिन्दू परिषद् ग्रन्थमाला—द्वितीय पुष्प

हिन्दू संस्कृति के प्रमुख ग्रन्थ

विश्व हिन्दू परिषद्
जिला सोपोर बारामुला कश्मीर

डॉ. ब्रजविहारी चौबे

विश्व हिन्दू परिषद्
1979

★ लेखक :
डॉ. ब्रजविहारी चौबे
विश्वेश्वरानन्द विश्वबन्धु संस्थान
पञ्जाब विश्वविद्यालय, होशियारपुर ।

★ प्रकाशक :
विश्व हिन्दू परिषद् पंजाब प्रदेश
होशियारपुर (पञ्जाब) ।

★ **कृष्ण जन्माष्टमी, भाद्रपद, सम्वत्** २०३५
प्रथम संस्करण 2200

★ **महाशिवरात्री, फाल्गुण, सम्वत्** २०३५
द्वितीय संस्करण 5000

मूल्य : पचास पैसे

★ मुद्रक :
एम. आर. शर्मा, मैनेजर
दी सर्वेश प्रिंटिंग ऐण्ड स्टेशनरी वर्कशाप
को-आप. इण्डस्ट्रीयल सोसायटी लि.,
बाज़ार वकीलां, होशियारपुर (पञ्जाब)

हिन्दू संस्कृति के प्रमुख ग्रन्थ

हिन्दू संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृति है। इस संस्कृति का विवेचन मुख्य रूप से जिन ग्रन्थों में हुआ है वे ही हिन्दू संस्कृति के आधार ग्रन्थ कहलाते हैं। इन ग्रन्थों की संख्या यद्यपि बहुत है, किन्तु कुछ प्रमुख ग्रन्थों का ही संक्षिप्त परिचय यहां दिया जायेगा।

वेद

वेद हिन्दुओं का सबसे प्राचीन ग्रन्थ है। दुनियां में वेदों से पुराना कोई ग्रन्थ नहीं मिलता। विदेशी भी इस बात को स्वीकार करते हैं। जर्मन विद्वान् मैक्समूलर ने लिखा है — 'विश्व के इतिहास में यदि किसी ग्रन्थ को प्राचीनतम कहा जा सकता है तो वह वेद है जिसमें मानव मस्तिष्क का सर्वोपरि विकास देखा जा सकता है।' वेद का अर्थ है ज्ञान। धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष रूप पुरुषार्थ जिनके द्वारा जाना जाए वही वेद है। वेद वह ग्रन्थ है जो इच्छित वस्तु की प्राप्ति तथा अनिच्छित को दूर करने का उपाय बताता है। जिसका ज्ञान प्रत्यक्ष या अनुमान के द्वारा नहीं हो सकता उसका ज्ञान इसके द्वारा होता है, इसीलिए इसको वेद कहते हैं। इसीलिए सभी भारतीय आस्तिक दर्शन वेदों की प्रामाणिकता में विश्वास करते हैं। वेदों की संख्या चार है—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। इनको चार संहिताएं भी कहते हैं।

ऋग्वेद :— ऋग्वेद का अर्थ है ऋचाओं का वेद। ऋचा का अर्थ है छंदों में रचे गये स्तुतिपरक मन्त्र। छन्दों में रचित स्तुतिपरक मन्त्रों का संकलन होने से इसे ऋक्संहिता भी कहते हैं। ऋग्वेद के मन्त्रों में अग्नि, इन्द्र, वरुण, अश्विन्, उषा, सवितृ, पूषन्, अर्यमन्, विष्णु, रुद्र, मरुत, विश्वदेवा आदि देवों की स्तुतियां हैं। इसमें प्रजापति, पुरुष, विश्वकर्मा आदि नाम से परमात्मा की स्तुतियां की गई है। इसमें कुल दश मण्डल हैं। प्रत्येक मण्डल में कई सूक्त हैं। यह वेद शेष तीनों वेदों का आधार है। सूक्तों के रचयिता या द्रष्टा ऋषि कहलाते हैं। गृत्समद्, विश्वामित्र, वामदेव, अत्रि, भरद्वाज, वसिष्ठ तथा कण्व प्रमुख ऋषि हैं।

यजुर्वेद:—यज्ञ करते समय अध्वर्यु नामक ऋत्विज जिन मन्त्रों को पढ़ता है उन मन्त्रों का संकलन जिस संहिता में किया गया है उसको यजुर्वेद कहते हैं। यजुर्वेद में मन्त्रों का संकलन यज्ञक्रम के अनुसार है। यजुर्वेद की प्रमुख दो शाखायें प्रचलित थीं; उत्तर भारत में शुक्ल यजुर्वेद और दक्षिण भारत में कृष्ण यजुर्वेद। शुक्ल यजुर्वेद में ४० अध्याय हैं।

सामवेद :—यज्ञ में उद्गाता नामक ऋत्विजद्वारा जिन मन्त्रों का गान किया जाता है उन मन्त्रों का संकलन जिस संहिता में किया गया है उसको सामवेद कहते हैं। यह संहिता 'आर्चिक संहिता' कहलाती हैं। मन्त्रों के ऊपर जो गान किया जाता था उन गानों का सकलन जिसमें किया गया है उसे 'गान संहिता' कहते हैं। इस 'गान संहिता' को ही मुख्य रूप से सामवेद कहा जाता है। साम का अर्थ होता है गान। मन्त्रों पर जो गान मिलते हैं वे ऋषियों द्वारा गाये गये थे।

अथर्ववेद :— जिन मन्त्रों के द्वारा यज्ञ में या यज्ञ से बाहर नाना प्रकार के शान्तिक, पौष्टिक एवं अभिचार सम्बन्धी कर्मों का सम्पादन किया जाता था, उन मन्त्रों का संकलन जिस संहिता में किया गया है उसको अथर्ववेद कहते है। अथर्वन् और अङ्गिरस् दोनों ऋषियों के मन्त्र इसमें संकलित होने के कारण इसे अथर्वाङ्गिरस वेद भी कहा जाता है। यज्ञ में ब्रह्मा द्वारा प्रयुक्त होने से इसको ब्रह्मवेद भी कहते हैं। इस में २० काण्ड हैं। इस वेद में आयुर्वेद आदि अनेक भौतिक विद्याओं का वर्णन मिलता है।

ब्राह्मण :—

एक विशेष शैली में लिखे गए वेदों के ही एक भाग को ब्राह्मण कहते हैं। यह वेदों का वह भाग है जिसमें संहिताओं के मन्त्रों का याज्ञिक कर्मों में विनियोग बताया गया है। ये एक प्रकार से मन्त्रों के भाष्य हैं। इनमें मुख्य रूप से यज्ञों का ही विस्तारपूर्वक विवेचन हुआ है। एक गृहस्थ के द्वारा किए जाने योग्य सम्पूर्ण धार्मिक कर्मो का वर्णन इन ब्राह्मणों में मिलता है। ब्राह्मण ग्रन्थ आकार में विशाल तथा संख्या में अनेक है। मुख्य ब्राह्मण ग्रन्थ निम्नलिखित हैं—

(१) ऐतरेय ब्राह्मण। (२) शतपथ ब्राह्मण।
(३) तैत्तिरीय ब्राह्मण। (४) ताण्डय ब्राह्मण।
(५) गोपथ ब्राह्मण।

आरण्यक :—

ब्राह्मण ग्रन्थों का ही एक भाग जिसमें यज्ञों का आध्यात्मिक महत्व बताया गया है आरण्यक कहलाता है। अरण्य अर्थात् जंगल में पढ़े-पढ़ाये जाने के कारण ही

इनको आरण्यक कहा जाता है। इनमें मन, प्राण, वाक्, आदि सूक्ष्म तत्वों तथा यज्ञों के ऊपर विशेष रूप से आध्यात्मिक ढंग से विचार किया गया है। इनका आकार अत्यन्त संक्षिप्त है। इनकी संख्या भी बहुत बड़ी नहीं। प्रमुख आरण्यक ग्रन्थ निम्नलिखित हैं :—

(१) ऐतरेयारण्यक। (२) बृहदारण्यक।
(३) तैत्तिरीयारण्यक। (४) मैत्रायणी आरण्यक।

उपनिषद् :—

वेद का वह भाग जिसमें जीवन, जगत्, आत्मा एवं ब्रह्म से सम्बन्धित विषयों के ऊपर विचार किया गया है, उपनिषद् कहलाता है। उपनिषद् का अर्थ ही होता है रहस्यज्ञान। सम्पूर्ण भारतीय दर्शन के स्रोत ये उपनिषदें हैं। सभी दार्शनिकों ने इन्हीं को अपने दर्शन का मूल आधार बनाया। विदेशियों ने भी इनकी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। वेद का अन्तिम भाग होने के कारण इनको 'वेदान्त' नाम से भी पुकारा जाता है। उपनिषदों की संख्या अनेक है। किन्तु उनमें प्रमुख उपनिषदें निम्नलिखित हैं :—

(१) ईश, (२) केन, (३) कठ, (४) प्रश्न, (५) मुण्डक, (६) माण्डूक्य, (७) ऐतरेय, (८) तैत्तिरीय, (९) बृहदारण्यक, (१०) छान्दोग्य, (११) कौषीतकि तथा (१२) श्वेताश्वतर।

इन्हीं उपनिषदों को वैदिक उपनिषद् के रूप में स्वीकार किया जाता है। अन्य जो उपनिषदें हैं वे शैव, वैष्णव एवं शाक्त आदि मतों से सम्बधिन्त हैं।

वेदांग

बहुत दिनों तक परम्परागत ढंग से वेदों का अध्ययन-अध्यापन भारतवर्ष में होता रहा। किन्तु धीरे-धीरे परम्परा लुप्त होने लगी। इसका परिणाम यह हुआ कि वेदों को समझना धीरे-धीरे कठिन होता गया। किन्तु वेदों का ज्ञान लुप्त न होने पावे इसलिए हमारे परम दयालु आचार्यों ने वेदों को समझने के लिए कई ग्रन्थ रचे। इन्हीं ग्रन्थों को वेदाङ्ग कहते हैं। वेदाङ्ग ६ प्रकार के हैं—

शिक्षा :— इसमें वेद मन्त्रों के सही-सही उच्चारण करने का तरीका बताया गया है।

व्याकरण :— इसमें शब्दों की शुद्धता और अशुद्धता का विचार किया जाता है।

निरुक्त :— इसमें वैदिक मन्त्रों का अर्थ स्पष्ट करने का तरीका बताया गया है।

छन्द :— इसमें वैदिक मन्त्रों में प्रयक्त छन्दों का ज्ञान कराया गया है।

ज्योतिष :—इसमें यज्ञ के लिए तिथि, वार, नक्षत्र, अयन आदि काल का विचार किया गया है।

कल्प :— इसमें व्यक्ति के जीवन में होने वाले सम्पूर्ण धार्मिक कर्मों का विवेचन हुआ है। इसके अन्तर्गत चार प्रकार के ग्रन्थ आते है—

(क) श्रौतसूत्र :— इन ग्रन्थों में दर्शपूर्णमास, चातुर्मास्य, राजसूय, वाजपेय, अश्वमेध, आदि अनेक वैदिक यज्ञों का सूत्र रूप में विवेचन किया गया है। आश्वलायन श्रौतसूत्र, कात्यायन श्रौतसूत्र, बौधायन श्रौतसूत्र, लाट्यायन श्रौतसूत्र आदि प्रमुख श्रौतसूत्र के ग्रन्थ हैं।

(ख) गृह्यसूत्र :— व्यक्ति के जीवन में गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि तक जितने संस्कार सम्पन्न किये जाते हैं उनका वर्णन गृह्य-सूत्रों, में किया गया है। गृह्यसूत्र ही हमारी संस्कार-विधि के ग्रन्थ है। प्रमुख गृह्यसूत्र, हैं—आश्वलायन गृह्यसूत्र, पारस्कर गृह्यसूत्र, वौधायन गृह्यसूत्र, आपस्तम्व गृह्यसूत्र, गोभिल गृह्यसूत्र आदि। उत्तर भारत (पंजाब, हिमाचल हरियाणा, उत्तर प्रदेश, विहार, बंगाल) में संस्कार विधि के लिये अधिकतर पारस्कर गृह्यसूत्र ही प्रचलित है। सामवेदी गोभिल का अनुसरण करते हैं। दक्षिण भारत में वौधायन, आपस्तम्व आदि गृह्यसूत्रों के अनुसार संस्कार सम्पन्न होते हैं। हमारे सभी संस्कार इन्हीं गृह्यसूत्रों के अनुसार सम्पन्न किये जाते हैं। इसलिए प्रत्येक हिन्दू को इन्हें अवश्य पढ़ना चाहिए।

(ग) धर्मसूत्र :—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्व एवं शूद्र इन चार वर्णों तथा ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास इन चार आश्रमों के लिए विहित धर्मों तथा कर्तव्यों का विवेचन धर्मसूत्रों में किया गया है। मानव, वसिष्ठ, गौतम, वौधायन, आपस्तम्व, हिरण्यकेशी आदि प्रमुख धर्मसूत्र ग्रन्थ हैं।

(घ) शुल्व सूत्र :—यज्ञ में वेदि के निर्माणका ढंग शुल्वसूत्रों में वताया गया है। इनसे प्राचीन ज्यामिति तथा वास्तुकला का ज्ञान होता है। कात्यायन, वौधायन, आपस्तम्व आदि के प्रमुख शुल्वसूत्र ग्रन्थ हैं।

स्मृति ग्रन्थ

धर्मसूत्रों के समय जो वर्णाश्रम धर्म था वह आगे चल कर कालभेद से अपूर्ण अथवा कालातीत (out of date) प्रतीत

होने लगा। समाज में कुछ नई मान्यताएं प्रचलित होने लगीं जिनका धर्मसूत्रों में उल्लेख नहीं था। कुछ तो पूर्व मान्यताओं से बिल्कुल विपरीत थीं। ऐसी परिस्थिति में धमसूत्रों के ही आधार पर नये धर्मशास्त्रों की रचना हुई जिन्हें स्मृति ग्रन्थ की संज्ञा दी गई है। इनमें वर्णाश्रम धर्म, प्रायश्चित्त, राजा, प्रजा के अधिकार, कर्त्तव्य, सामाजिक आचार-विचार-व्यवस्था, नीति, सदाचार और शासन-सम्बन्धी नियमों का विवेचन किया गया है। स्मृति ग्रन्थों की संख्या अनेक है। प्रमुख स्मृतियां निम्नलिखित हैं—

(१) मनु स्मृति, (२) याज्ञवल्क्य स्मृति, (३) अत्रि स्मृति, (४) विष्णु स्मृति, (५) हारीत स्मृति, (६) उशनस स्मृति, (७) अंगिरा स्मृति, (८) यम स्मृति, (९) कात्यायन स्मृति, (१०) बृहस्पति स्मृति, (११) पाराशर स्मृति, (१२) व्यास स्मृति, (१३) दक्ष स्मृति, (१४) गौतम स्मृति, (१५) वासष्ठ स्मृति, (१६) नारद स्मृति, (१७) भृगु स्मृति, (१८) शंख स्मृति।

पुराण

सृष्टि की उत्पति, प्रलय, वंश-परम्परा, मनुओं का वर्णन तथा विशिष्ट व्यक्तियों का चरित्र जिन ग्रन्थों में वर्णित है उन्हें पुराण कहते हैं। हिन्दू धर्म के विकास में पुराणों का बड़ा योगदान है। ये चिरकाल से हिन्दू समाज को उद्बुद्ध करते आ रहे हैं। हिन्दू संस्कृति के मूलाधार के रूप में वेदों के बाद पुराणों का ही स्थान है। भारतीय जन-जीवन पर जितना गहरा प्रभाव पुराणों ने डाला है, उतना किसी अन्य ग्रन्थ ने नहीं। भारत भूमि पर जितने प्रमुख धार्मिक मत एवं सम्प्रदाय प्रचलित हुए उनका प्रामाणिक विवेचन पुराणों में ही मिलता

है। वैष्णव, शैव एवं शाक्त आदि मतों का पूर्ण विवेचन यहाँ है। पुराण हिन्दू धर्म एवं दर्शन के विश्वकोश रूप हैं। ज्ञान, भक्ति एवं कर्म की त्रिवेणी इनमें प्रवाहित हुई है। राजनीति धर्मनीति, समाज नीति, इतिहास, अलंकार, व्याकरण, भूगोल ज्योतिष, आयुर्वेद आदि सम्पूर्ण विद्याओं का प्रतिपादन पुराणों में हुआ है। कृष्ण-द्वैपायन व्यास को इनका रचयिता माना जाता है। सरल और रोचक कथा एवं आख्यान रूप में लिखे जाने के कारण ये पुराण भारतीय जनता में अधिक लोकप्रिय हुये। वैदिक यज्ञों के स्थान पर सप्ताह रूप में इन पुराणों का ही पाठ आज अधिक प्रचलित है। पुराणों की संख्या १८ है जो निम्नलिखित हैं—

(१) ब्रह्मपुराण, (२) पद्म पुराण, (३) विष्णु पुराण, (४) शिव या वायु पुराण, (५) भागवत पुराण, (६) नारद पुराण, (७) मार्कण्डे पुराण, (८) अग्नि पुराण, (९) भविष्य पुराण, (१०) ब्रह्मवैवर्त पुराण, (११) लिङ्ग पुराण, (१२) बाराह पुराण, (१३) स्कन्द पुराण, (१४) वामन पुराण, (१५) कूर्म, पुराण, (१६) मत्स्य पुराण, (१७) ब्रह्माण्ड पुराण, (१८) गरुड पुराण।

जैन पुराण:—

सनातन मतावलम्बियों की तरह जैन के भी पुराण मिलते है। दिगम्बर जैनियों ने चौबीस तीर्थंकरों मतावलम्बियों के वर्णन में २४ पुराणों की रचना की है। ये २४ पुराण हैं—

(१) आदि पु०, (२) अजितनाथ पु०, (३) संभवनाथ पु०, (४) अभिनन्द पु०, (५) सुमतिनाथ पु०, (६) पद्मप्रभ पु०, (७) सुपार्श्व पु०, (८) चन्द्रप्रभद्र पु०, (९) पुष्पदन्त पु०, (१०) शीतलनाथ पु०, (११) श्रेयाँश पु०,

(१२) वासुपूज्य पु०, (१३) विमलनाथ पु०, (१४) अनन्तजीत पु०, (१५) धर्मनाथ पु०, (१६) शान्तिनाथ पु०, (१७) कुन्थुनाथ पु०, (१८) अमरनाथ पु०, (१९) मल्लिनाथ पु०, (२०) मुनि सुव्रत पु०, (२१) अरिष्टनेमिनाथ पु०, (२२) नेमिनाथ पु०, (२३) पार्श्वनाथ पु० और (२४) सम्मति पु०।

इन २४ पुराणों के अतिरिक्त भी कुछ जैन पुराण मिलते हैं जिनमें पद्म पुराण और उत्तर पुराण प्रमुख हैं। श्वेताम्बर सम्प्रदाय के १२ आगमिक ग्रन्थ मिलते हैं।

बौद्ध पुराण :—

बौद्ध मतावलम्बियों के भी पुराण मिलते हैं जिनमें तथागतों तथा बौद्धों के वृत्तादि तथा उनसे सम्बन्धित आख्यान एवं इतिहास वर्णित है। प्रमुख बौद्ध पुराण निम्नलिखित हैं—

(१) प्रज्ञा परिमिता, (२) गण्डव्यूह, (३) समाधिराज, (४) लङ्कावतार, (५) तथागत गुह्यक, (६) सद्धर्म पुण्डरीक, (७) ललित विस्तर, (८) सुवर्ण प्रभा, (९) दश भूमीश्वर।

त्रिपिटक :—बौद्ध मतावलम्बियों का यह प्रमुख ग्रन्थ है। इसमें भगवान् बुद्ध के सम्पूर्ण वचन संकलित हैं। त्रिपिटक का अर्थ है तीन पिटकों (पिटारियों) का समूह। तीन पिटक हैं—सुत्त पिटक, विनय पिटक तथा अभिधम्म पिटक।

जातकमाला :—इसमें भगवान् बुद्ध के कई जन्मों की कथाएं वर्णित हैं।

दर्शन

मानव जीवन का अन्तिम लक्ष्य मोक्ष है। उस मोक्ष का स्वरूप क्या है तथा उस तक कैसे पहुँचा जा

सकता है इसी का सक्ष्म रूप से विवेचन करने वाले शास्त्रों को दर्शन कहा जाता है। इनमें जीव, जगत्, और ब्रह्म का सूक्ष्म रूप से विचार हुआ है। भारतीय दर्शन ९ प्रकार के हैं :—

१. **सांख्यदर्शन**:—इस दर्शन के प्रवर्तक महर्षि कपिल थे। इसके अनुसार पुरुष, प्रकृति, बुद्धि, अहंकार, मन सहित दस इन्द्रियां (कान, त्वक्, नेत्र, जिह्वा, नाक, हाथ, पैर, वाक्, पायु और उपस्थ), पाँच तन्मात्रायें (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, और गन्ध) तथा पाँच महाभूत (आकाश, वायु, अग्नि, जल, और पृथिवी) इन २५ तत्वों के ज्ञान से मोक्ष की प्राप्ति होती है। 'सांख्य-सूत्र' सांख्य दर्शन का मूल ग्रन्थ है।

२. **योगदर्शन**:— यद्यपि यह दर्शन बहुत पुराना है किन्तु महर्षि पतञ्जलि को इसका प्रतिष्ठाता माना जाता है। चित्त की वृत्तियों के निरोध को योग कहते हैं। योगदर्शन के अनुसार योग द्वारा ही मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है। पतञ्जलि का 'योगसूत्र' योगदर्शन का मूल ग्रन्थ है।

३. **न्यायदर्शन** :—इस दर्शन के प्रवर्तक महर्षि गौतम थे। इस दर्शन क अनुसार प्रत्यक्ष, अनुमान, आप्त आदि प्रमाणों के द्वारा ही प्रमेय का ज्ञान हो सकता है। गौतम का 'न्यायसूत्र' इस दर्शन का मूल ग्रन्थ है।

४. **वैशेषिकदर्शन** :—इस दर्शन के प्रवर्तक महर्षि कणाद थे। इस दर्शन के अनुसार ६ पदार्थों (द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष और समवाय) के तत्वज्ञान अर्थात स्वरूप ज्ञान से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है। कणाद का 'वैशेषिक सूत्र' इस दर्शन का मूल ग्रन्थ है।

५. **पूर्व मीमांसादर्शन** :— इस दर्शन के प्रवर्तक महर्षि

जैमिनि थे। इस दर्शन के अनुसार वैदिक यज्ञों के विधिपूर्वक सम्पादन से ही अभीष्ट फल की प्राप्ति हो सकती है। इसलिये यह दर्शन वैदिक याज्ञिक विधियों पर मुख्य रूप से विचार करता है। जैमिनि का 'मीमांसासूत्र' इस दर्शन का मूल ग्रन्थ है। कुमारिल, प्रभाकर आदि इसी मीमांसा दर्शन के प्रमुख आचार्य हुये हैं।

६. **वेदान्त दर्शन**—इस दर्शन के प्रवर्तक महर्षि वादरायण थे। इस दर्शन को 'उत्तर मीमांसा भी कहा जाता है। इस दर्शन के अनुसार ब्रह्म ही संसार का कारण है। उसी का ज्ञान होने पर मोक्ष होता है। वेदान्त दर्शन का मूल ग्रन्थ वादरायण प्रणीत 'वेदान्तसूत्र' है जिसे 'ब्रह्मसूत्र' भी कहा जाता है। इसी ब्रह्मसूत्र के व्याख्यान में आगे वेदान्त-दर्शन के कई रूप सामने आये। उनमें मुख्य थे—

(क) **अद्वैतवाद**— इसके प्रवर्तक आचार्य गौड़पाद हुये। बाद में आचार्य शङ्कर इसके मुख्य प्रचारक एवं संस्थापक हुए। उन्होंने ब्रह्मसूत्र के ऊपर 'शारीरक भाष्य' लिख कर इस दर्शन को प्रतिष्ठित किया। इस दर्शन के अनुसार ब्रह्म सत्य है, संसार मिथ्या है। अविद्या (माया) के कारण यह संसार स्वप्न के समान प्रतीत होता है।

(ख) **विशिष्टाद्वैतवाद**— इसके प्रवर्तक आचार्य रामानुज हुए। इस मत के अनुसार जीव और जगत् ब्रह्म के विशेषण हैं। इसलिए जब ब्रह्म सत्य है तो उसके साथ उसके विशेषण रूप जीव और जगत् भी सत्य हैं। रामानुजाचार्य ने इस मत की स्थापना ब्रह्मसूत्र के अपने 'श्रीभाष्य' में की है।

(ग) **द्वैतवाद**—इस वाद के प्रवर्तक मध्वाचार्य हुए। इस मत के अनुसार ब्रह्म और जीव दो तत्त्व हैं तथा दोनों में भेद है।

(घ) **अचिन्त्य भेदाभेदवाद** — इस वाद के प्रवर्तक श्री निम्बार्काचार्य हुये। इस मत के अनुसार ब्रह्म और जीव में जल और लहर तथा शब्द और अर्थ के समान भेद भी है और अभेद भी है।

(ङ) **शुद्धाद्वैतवाद**—इस वाद के प्रवर्तक श्री वल्लभाचार्य जी हुए। इस मत के अनुसार श्रीकृष्ण ही शुद्ध परम ब्रह्म है।

७. **जैनदर्शन**:—जैनदर्शन स्याद्वाद या अनेकान्तवाद के नाम से प्रसिद्ध है। इसके अनुसार कोई वस्तु एकान्त नित्य और एकान्त अनित्य नहीं। सभी में नित्य-अनित्य की सत्ता वर्तमान रहती है। किसी वस्तु के विषय में हमारा जो ज्ञान होता है वह पूर्ण नहीं होता। उस वस्तु के और भी पक्ष होते हैं जिनकी हमें जानकारी नहीं होती, या वे हमें अभिप्रेत नहीं होते। इसलिऐ इस दर्शन के अनुसार 'यही सत्य है' की अपेक्षा 'यह भी सत्य है' ऐसा मानना अधिक समीचीन है। सर्वमत समन्वय के लिए यह दर्शन बड़ा महत्वपूर्ण है। जैन दर्शन में परमाणुओं के संघात से ही संसार के सारे पदार्थों की उत्पत्ति मानी जाती है।

८. **बौद्ध दर्शन** :— बौद्ध दर्शन विज्ञानवाद तथा शून्यवाद के नाम से प्रसिद्ध है। इस दर्शन के अनुसार ससार में दुःख ही दुःख है। यहां की कोई वस्तु स्थिर नहीं है, वह हर क्षण बदलती रहती है। असत् कारणों से संसार की उत्पत्ति होती है। बौद्ध दर्शन के प्रतिष्ठाता नागार्जुन हैं।

९. **चार्वाक दर्शन** :— यह एक ऐसा दर्शन है जो पूर्णरूप से भौतिकतावादी है। इस दर्शन के प्रवर्तक आचार्य बृहस्पति माने जाते हैं, किन्तु अधिक ख्याति चार्वाक की हुई। इस दर्शन के अनुसार यह शरीर ही सब कुछ है। आत्मा या ईश्वर नाम

का कोई दूसरा तत्त्व नहीं। मरने के बाद पुनः जन्म नहीं होता। इस दर्शन का बहुत ही प्रचलित श्लोक है—

यावज्जीवेत् सुखं जीवेद् ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्।
भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः॥[1]

यह दर्शन यद्यपि भारत में उत्पन्न हुआ किन्तु इसके प्रति लोगों की आस्था नहीं जमी। इसे लोगों ने नास्तिक दर्शन कह कर इसकी उपेक्षा कर दी।

काव्य ग्रन्थ

रामायण :—

रामायण संस्कृति साहित्य का प्रथम महाकाव्य है। इस के रचयिता महर्षि वाल्मीकि हैं। वाल्मीकि जी अपनी तपस्या में लगे हुए थे। एक दिन प्रातः तमसा नदी में स्नान करने के लिए वे जा रहे थे। वहां उन्होंने देखा कि एक बहेलिए ने क्रौञ्च पक्षी के जोड़े में से नर क्रौञ्च को मार दिया है और मादा क्रौञ्च पक्षी विलाप कर रही है। इस करुण दृश्य को देख कर महर्षि वाल्मीकि के मुँह से अचानक एक श्लोक निकल पड़ा—

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्॥[2]

---

1. जब तक जीओ सुखपूर्वक जीओ ; कर्ज लेकर भी घी पीओ। इस शरीर के नष्ट हो जाने पर फिर जन्म कहां ?

2. हे बहेलिया, तुम बहुत वर्षों तक प्रतिष्ठा को मत प्राप्त होवो, क्योंकि तुमने संभोगरत क्रौञ्च पक्षी के जोड़े में से एक को मार दिया है।

यह श्लोक मुख से निकला ही था कि बहेलिया वहीं पर गिर कर मर गया। बहेलिये को मरा हुआ देख कर वाल्मीकि को आश्चर्य हुआ। इतने में ब्रह्मा उपस्थित हुए और उन्होंने कहा—महर्षि! आप शोक न करें, आप की वाणी तपस्या से सिद्ध हो चुकी है। अब आप इस वाणी के द्वारा सर्वगुण सम्पन्न किसी महान् विभूति का गुणगान कीजिए। इतना कह कर ब्रह्मा चले गये। इसके बाद नारद जी आये। महर्षि वाल्मीकि ने नारद जी से पूछा—हे मुनिवर! आप हमें बतावें कि इस समय सर्वगुण सम्पन्न महापुरुष कौन है? नारद जी ने कहा—महर्षि! इस समय जो इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न राम हैं वे सर्वगुण सम्पन्न हैं। उन्हीं का काव्य में वर्णन कर आप अपनी वाणी को अमर बनाइये। नारद जी के सुझाव को स्वीकार कर महर्षि वाल्मीकि ने सात काण्डों में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम का चरित्र वर्णित किया। सात काण्ड इस प्रकार हैं—(१) बालकाण्ड। (२) अयोध्या काण्ड। (३) अरण्य काण्ड। (४) किष्किंधा काण्ड। (५) सुन्दर काण्ड। (६) युद्ध काण्ड और (७) उत्तर काण्ड।

बाल काण्ड में अयोध्या में दशरथ के घर राम, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न के जन्म तथा जनकपुर में उनके विवाह की कथा वर्णित है। अयोध्या काण्ड में राम के राज्याभिषेक की तैयारी, कैकेयी का वर मांगना, सीता तथा लक्ष्मण सहित राम का वनवास, दशरथ की मृत्यु, भरत का राम से मिलने जाना तथा भरत का अयोध्या वापस आना आदि घटनाएं वर्णित हैं। अरण्यकाण्ड में सीता का हरण; किष्किंधा में हनुमान तथा सुग्रीव से मित्रता, वालि-वध, वानरों को सीता की खोज के लिये भेजना आदि; सुन्दर काण्ड में हनुमान का समुद्र पार कर

लंका में जाना, लंका-दहन तथा सीता का सन्देश लेकर वापस आना, तथा राम का समुद्र तट पर वानर सेना के साथ आना वर्णित है। युद्ध काण्ड में मेघनाद, कुम्भकर्ण तथा रावण के साथ युद्ध और अन्त में सब का वध वर्णित है। उत्तर काण्ड में राम का अयोध्या वापस आना एवं उनका राज्याभिषेक आदि वणत है।

रामायण हिन्दू संस्कृति की एक अमर रचना है। एक परिवार में पिता-पुत्र, माता-पुत्र पति-पत्नी, भाई-भाई तथा स्वामि-सेवक का कैसा आदर्श सम्बन्ध होना चाहिए, इसका सबसे अच्छा रूप रामायण में दिखाई पड़ता है। राजा और प्रजा का क्या सम्बन्ध होना चाहिए यह भी रामायण में दिखाई पड़ता है। रामायण की महानता एवं उसकी लोकप्रियता के विषय में स्वयं वाल्मीकि जी का ही कथन है—

यावत्स्थास्यन्ति गिरय: सरितश्च महीतले।
तावद् रामायण कथा लोकेषु प्रचरिष्यति॥[1]

महाभारत :—

महाभारत महर्षि व्यास की अमर रचना है। इसमें कौरवों तथा पाण्डवों के बीच राज्य प्राप्ति के लिए हुए महान् युद्ध का वर्णन है। महाराज शन्तनुकी गंगा नामक पत्नी से देवब्रत नामक पुत्र पैदा हुआ जो आगे चल कर भीष्म के नाम से प्रसिद्ध हुये। शन्तनु ने सत्यवती नामक एक सुन्दरी से

---

1 जब तक इस पृथिवी पर पर्वत तथा नदियां स्थित रहेंगी तब तक लोक में रामायण की कथा प्रचलित रहेगी।

दूसरी शादी की जिससे विचित्रवीर्य तथा चित्रांगद नामक दो पुत्र पैदा हुए। कुछ दिनों के बाद दोनों की मृत्यु हो गई और उनकी कोई सन्तान नहीं थी। बाद में व्यास जी की कृपा से दोनों की पत्नियों अम्बिका और अम्बालिका से क्रमशः धृतराष्ट्र और पाण्डु पैदा हुए। धृतराष्ट्र जन्म से ही अंधे थे इसलिए राज्य की देख भाल पाण्डु ही करते थे। धृतराष्ट्र को गान्धारी से एक सौ पुत्र पैदा हुये जिनमें दुर्योधन सब से बड़ा था। पाण्डु को कुन्ती और माद्री नामक दो पत्नियों से युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन तथा नकुल और सहदेव पांच पुत्र पैदा हुए। धृतराष्ट्र के पुत्र कौरव तथा पाण्डु के पांच पुत्र पाण्डव कहलाते थे। पाण्डु की असामयिक मृत्यु के बाद धृतराष्ट्र ही राज्य की देखभाल करते थे क्योंकि पाण्डु के पुत्र अभी छोटे थे। सबकी शिक्षा साथ-साथ हो रही थी। दुर्योधन कपट से सम्पूर्ण राज्य हड़प लेना चाहता था। उसने पाण्डवों को जुआ में हराकर राज्य से निकाल दिया। पाण्डव चाहते थे कि उन्हें सिर्फ पाँच गांव भी मिल जाये तो वे शान्तिपूर्वक रह जाएंगे। किन्तु दुर्योधन ने इन्कार कर दिया। इस का परिणाम यह हुआ कि दोनों में महान् युद्ध हुआ। देश विदेश के राजा इस युद्ध में दोनों पक्षों से सम्मिलित हुए। भगवान् श्रीकृष्ण पाण्डवों के सहायक थे। १८ दिनों तक युद्ध चलता रहा। अन्त में दुर्योधन की हार हुई और पाण्डव विजयी हुए। युधिष्ठिर हस्तिनापुर के राजा हुए।

महाभारत हिन्दू संस्कृति के सम्पूर्ण ज्ञान का महासागर है। इसमें एक लाख श्लोक हैं। हिन्दू धर्म का ऐसा कोई पक्ष नहीं जिसका इसमें वर्णन न किया गया हो। महाभारतकार ने

स्वयं लिखा है—

धर्मे अर्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित् ॥[1]

महाभारत में १८ पर्व हैं जिनके नाम इस प्रकार हैं—

(१) आदि, (२) सभा, (३) वन, (४) विराट्, (५) उद्योग, (६) भीष्म, (७) द्रोण, (८) कर्ण, (९) शल्य, (१०) सौप्तिक, (११) स्त्री, (१२) शान्ति, (१३) अनुशासन, (१४) अश्वमेध, (१५) आश्रमवासी, (१६) मौसल, (१७) महाप्रस्थानिक और (१८) स्वर्ग। हरिवंश महाभारत का परिशिष्ट है।

श्रीमद्भगवद्गीता :—

गीता हिन्दुओं की बहुमूल्य निधि है। यह महाभारत का ही एक उपाख्यान है। जिस समय अर्जुन युद्ध भूमि में युद्ध के लिए एकत्रित अपने सम्बन्धियों तथा आचार्यों को देख कर उनकी भावी मृत्यु से होने वाले दुष्परिणामों की कल्पना मात्र से कांप उठता है और समझता है कि उसका सम्पूर्ण पाप उसी पर आयेगा, उसी समय भगवान् श्रीकृष्ण उसको स्वधर्मरूप युद्ध में प्रवृत्त होने के लिए गीता का उपदेश करते हैं। यद्यपि गीता के उपदेश में भगवान् श्रीकृष्ण का प्रमुख लक्ष्य अर्जुन को युद्ध में प्रवृत्त करना था जिसके लिए उन्होंने कई युक्तियां दी हैं, किन्तु उसको आधार बनाकर उन्होंने ऐसे अनेक दार्शनिक,

1. हे मनुष्यों में श्रेष्ठ! धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के विषय में जो कुछ यहां कहा गया है, वही अन्यत्र वर्णित है; जो यहां वर्णित नहीं है, वह कहीं भी नहीं है।

धार्मिक एवं नैतिक सिद्धान्तों का भी प्रतिपादन किया है जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपयोगी हैं। भारतीय क्या पाश्चात्य विद्वानों ने भी इसकी बहुत प्रशंसा की है। अपने दार्शनिक, धार्मिक एवं नैतिक सिद्धान्तों की सार्वभौमिकता तथा सहिष्णुता के कारण विश्व के सभी विचारशील व्यक्तियों के द्वारा यह नैतिक एवं धार्मिक आचार की पथप्रदर्शिका के रूप में देखी जाती है। इस के १८ अध्यायों में कर्मयोग, भक्तियोग तथा ज्ञानयोग की त्रिवेणी प्रवाहित हुई है। निष्काम कर्म करने पर इसमें अधिक बल दिया गया है। हिन्दू धर्म के सभी शास्त्रों का यह निचोड़ है।

कुमार सम्भव :—

इसके रचयिता संस्कृत के सर्वश्रेष्ठ कवि कालिदास हैं। इसकी कथावस्तु पौराणिक है। तारक नामक असुर ने देवताओं को पराजित कर दिया था। देवताओं की विजय तभी हो सकती थी जब शिव के पुत्र कार्तिकेय उनके सेनापति बनते क्योंकि उनको छोड़कर तारकासुर का वध कोई नहीं कर सकता था। देवताओं ने भगवान् शंकर से प्रार्थना की। उन्होंने उन की प्रार्थना स्वीकार की। भगवान् शिव को वर रूप में पाने के लिए पार्वती ने घोर तपस्या की क्योंकि तपस्या को छोड़ कर दूसरा कोई उपाय नहीं था। भगवान् शङ्कर ने कामदेव को जला दिया था। ब्रह्मचारी रूप में भगवान् शङ्कर ने पार्वती की परीक्षा ली। अन्त में भगवान् शङ्कर के साथ उसका विवाह हुआ तथा कार्तिकेय का जन्म हुआ जिसने तारकासुर का वध करके देवताओं को मुक्त किया। भोग की अपेक्षा तप ही जीवन का सार है यह इस काव्य का मुख्य सन्देश है।

रघुवंश :—

इसके भी रचयिता महाकवि कालिदास है। इसमें भगवान् रामचन्द्र की वंशावली का बड़े ही सुन्दर ढंग से वर्णन किया गया है। इस काव्य का आधार रामायण तथा पौराणिक साहित्य है।

बुद्ध चरित्र :—

इसके रचयिता महाकवि अश्वघोष हैं। इसमें भगवान् बुद्ध का जीवन चरित्र वर्णित है। अश्वघोष बौद्ध मत के अनुयायी थे इसलिए इस काव्य में बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों का उन्होंने अत्यन्त रोचक ढंग से वर्णन किया है।

सौन्दर नन्द :—

यह भी महाकवि अश्वघोष की रचना है। इसमें भगवान् बुद्ध के चचेरे भाई सुन्दर के बौद्ध धर्म में दीक्षित होने की घटना अत्यन्त रोचक काव्यात्मक ढंग से वर्णित है।

किरातार्जुनीय :—

इसके रचयिता महाकवि भारवि हैं। इसमें अर्जुन द्वारा इन्द्रगिरि पर्वत पर भगवान् शंकर से पाशुपत अस्त्र प्राप्त करने के लिए तपस्या करने का वर्णन है। इसका कथानक महाभारत से लिया गया है। इसमें राजनीति शास्त्र का अत्यन्त सुन्दर ढंग से वर्णन किया गया है। द्रौपदी द्वारा युधिष्ठिर को दिया गया राजनीति का उपदेश अत्यन्त मार्मिक है।

शिशुपाल वध :—

इसके रचयिता महाकवि माघ है। इसमें युधिष्ठिर के यज्ञ में आये शिशुपाल का भगवान् श्री कृष्ण द्वारा वध की कथा काव्यात्मक ढंग से वर्णित है। इसका कथानक महाभारत से लिया गया है।

हरविजय :—

इसके रचयिता महाकवि रत्नाकर हैं। यह ५० सर्गों का एक विशाल महाकाव्य है। इसमें भगवान् शंकर द्वारा त्रिपुर-विजय की कथा वर्णित है।

नैषधचरित :—

इसके रचयिता महाकवि श्री हर्ष हैं। यह संस्कृत साहित्य का एक अत्यन्त क्लिष्ट महाकाव्य है। इसमें निषध देश के राजा नल तथा विदर्भ देश के राजा की पुत्री दमयन्ती का चरित्र वर्णित है। इसका कथानक भी महाभारत से लिया गया है।

रामचरितमानस :—

इसकी रचना भक्त कवि गोस्वामी तुलसीदास ने की थी। संस्कृत में कई रामायण थे किन्तु आम जनता संस्कृत से अनभिज्ञ-थी इसलिए गोस्वामी तुलसीदास ने आम जनता के लिए हिन्दी-भाषा में 'रामचरित मानस' नाम से रामायण की रचना की इसमें राम को परब्रह्म मान कर उनकी सांसारिक लीलाओं का वर्णन किया है। आज हिन्दू समाज में इस ग्रन्थ का अत्यधिक प्रचार है। रामायण के नाम पर यही प्रचलित है। यद्यपि राम को आधार बनाकर तुलसीदास के बाद भी अनेक काव्य लिखे गए किन्तु अपनी सरलता एवं रोचकता के कारण इसने सबको अभिभूत कर दिया। आज विदेशों में भी इसका अधिक प्रचार हो रहा है। दुनियां की अन्य भाषाओं में इसके अनेक अनुवाद हुए हैं। घर-घर में इसका प्रचार है। हिन्दू संस्कृति के जीवन्त मूल्य इसमें प्रतिबिम्बित हुए हैं।

गुरु ग्रन्थ साहब :—

इसका प्रथम संकलन भाई गुरदास की सहायता से गुरु अर्जुनदेव के द्वारा 'आदि ग्रन्थ' के नाम से किया गया था।

इसमें उनसे पूर्ववर्ती गुरुओं तथा कबीर, त्रिलोचन, वेणी, धन्ना, रामदेव, फरीद, जैदेव, बीरवल, साईदास, सूरदास, मीरां बाई तथा भक्त रविदास आदि कई सन्तों की वाणी संकलित थी। इसका क्रमशः विस्तार होता गया। जो-जो गुरु हुए अगर उनकी कोई वाणी हुई तो उसे भी इसमें सम्मिलित किया जाता रहा इसको अन्तिम रूप गुरु गोविन्दसिंह ने दिया। उन्होंने अपने पिता श्री गुरु तेगबहादुर की वाणी इसमें सम्मिलित कर इसे 'गुरु ग्रन्थ साहब' का नाम दिया। गुरु गोविन्द के समय में ही गुरु घराने से सम्बन्धित कई लोगों ने अपने को गुरुगद्दी का अधिकारी बताना शुरू किया था। यह भावना हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये उनके द्वारा नवनिर्मित 'खालसा पन्थ' में पारस्परिक कलह का कारण न बन जाए इससे बचने के लिए तथा जीवित किसी उपयुक्त गुरु का अभाव देखकर गुरु गोविन्दसिंह जी ने 'आदि ग्रन्थ' को ही विधिवत् गुरुत्व सौंप दिया। उनके बाद गुरु-परम्परा बन्द हो गई और आदि ग्रन्थ को ही 'गुरु ग्रन्थ साहब' के नाम से पुकारा जाने लगा, आज सिख परिवार में विवाह आदि संस्कारों में इसी का पाठ किया जाता है। गुरु ग्रन्थ साहब की महत्ता इस बात में है कि यह पहला ग्रन्थ है जिसमें पूर्व कालीन एवं समकालीन वैष्णवों, सन्तों सूफियों की रचना का एकत्र संकलन किया गया। इस ग्रन्थ ने राष्ट्रीय संग्रह भावना का सूत्रपात किया। धार्मिक एकता की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण प्रयास था।

सत्यार्थ प्रकाश :—

इसकी रचना महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने की थी। इसमें १० समुल्लास हैं। प्रथम में ईश्वर के ओङ्कारादि

नामों की व्याख्या, दूसरे में सन्तानों की शिक्षा, तृतीय में ब्रह्मचर्य पठनपाठन व्यवस्था, सत्यासत्य ग्रन्थों के नाम और पढ़ने-पढ़ाने की रीति, चतुर्थ में विवाह और गृहस्थाश्रम के व्यवहार, पंचम में वानप्रस्थ और संन्यासाश्रम की विधि, छठे में राजधर्म, सातवें में वेदेश्वर विषय, आठवें में जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय, नवें में विद्या, अविद्या, बन्ध और मोक्ष की व्याख्या, दसवें में आचार, अनाचार और भक्ष्याभक्ष्य विचार है। यहां तक सत्यार्थ प्रकाश का पूर्वार्द्ध है। शेष चार समुल्लासों में परमत खण्डन है। ग्यारहवें में आर्यावर्तीय मत-मतान्तरों का खण्डन विषय, १२वें में चारवाक, बौद्ध और जैनमत का विषय, १३वें में ईसाई मत का विषय तथा १४वें में मुसलमानों के मत का विषय है।

इस ग्रन्थ में स्वामी जी का विशेष आग्रह वेदादिशास्त्रानुकूल श्रेष्ठ बातों को ग्रहण करने तथा अश्रेष्ठ बातों को छोड़ने पर है। आर्यसमाज मतावलम्बी इस ग्रन्थ को अत्यन्त आदर की दृष्टि से देखते हैं।

पुराण दिग्दर्शन :—

इसके रचयिता माधवाचार्य हैं। इसमें पुराणों का वेद जैसा महत्व दिया गया है। पुराण तथा पौराणिक धर्म पर जो आपत्तियां की जाती हैं उन सबका समाधान इसमें किया गया है। सनातनी इस ग्रन्थ को बहुत महत्व देते हैं। इसी प्रकार का एक ग्रन्थ है 'क्यों' जिसके रचयिता माधवाचार्य ही हैं। उन्होंने सनातत पद्धति में जो कर्म काण्ड होते हैं वे क्यों होते हैं उसका समाधान किया है।

हिन्दू संस्कृति के जिन आधार ग्रन्थों का ऊपर संक्षेप में परिचय दिया गया उनकी जानकारी प्रत्येक हिन्दू को रखनी चाहिए। ●

पं. मदनमोहन मालवीय कृत हिन्दू धर्मोपदेश

हिताय सर्वलोकानां निग्रहाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय प्रणम्य परमेश्वरम् ॥ १ ॥
ग्रामे ग्रामे सभा कार्या ग्रामे ग्रामे कथा शुभा ।
पाठशाला मल्लशाला प्रतिपर्व महोत्सवः ॥ २ ॥
अनाथा विधवा रक्ष्या मन्दिराणि तथा च गौः ।
धर्म्यं संगठनं कृत्वा देवं दानं च तद्धितम् ॥ ३ ॥
स्त्रीणां समादरः कार्यो दुःखितेषु दया तथा ।
अहिंसका न हन्तव्या आततायी वधार्हणः ॥ ४ ॥
अभयं सत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्यं धृतिः क्षमा ।
सेव्यं सदाऽमृतमिव स्त्रीभिश्च पुरुषैतस्था ॥ ५ ॥
कर्मणां फलमस्तीति विस्मर्तव्यं न जातुचित् ।
भवेत्पुनः पुनर्जन्म मोक्षस्तदनुसारतः ॥ ६ ॥
उत्तमः सर्वधर्माणां हिन्दुधर्मोऽयमुच्यते ।
रक्ष्यः प्रचारणीयश्च सर्वभूतहितैरतैः ॥ ७ ॥

अर्थ--सभी लोगों के कल्याण, दुष्टों के संहार तथा धर्म की मर्यादा स्थापित करने के लिए श्री परमेश्वर को प्रणाम करके ॥१॥ गाँव-गाँव में सभा करे, गाँव-गाँव में पवित्र कथा कहे । पाठशाला तथा व्यायामशाला का निर्माण करे । प्रति पूर्णिमा या संक्रान्ति को महोत्सव मनावे ॥२॥ अनाथ, विधवाओं, मन्दिरों तथा गौ जाति की रक्षा करे । हिन्दू धर्म का संगठन करे और उसके कल्याण के लिए यथाशक्ति दान देवे ॥३॥ नारी जाति का आदर करे तथा दुखिओं के प्रति दया भाव रखे । हिंसा न करने वाले की कभी हिंसा न करे, किन्तु आतताई का अवश्य वध करे ॥४॥ कभी न डरना, सत्य बोलना, चोरी न करनां, ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना, धैर्य धारण करना तथा क्षमा भाव रखना, इन सब गुणों का पालन सभी स्त्री तथा पुरुषों के द्वारा अमृत के समान किया जाना चाहिए ॥५॥ यह कभी भी न भूले कि पाप-पुण्य सभी कर्मों का फल भोगना पड़ता है । उसी के अनुसार बार-बार जन्म अथवा मोक्ष होता है ॥६॥ सभी धर्मों में श्रेष्ठ यह हिन्दू धर्म कहा जाता है । सभी प्राणियों के कल्यांण में लगे व्यक्तियों के द्वारा यह धर्म रक्षणीय तथा प्रचारणीय है ।

॥ धर्मो रक्षति रक्षितः ॥

अनेकता में एकता

अनेकता में एकता, हिन्दु की विशेषता।
एक राह के हैं मीत, मीत एक प्यार के।
एक बाग के हैं फूल, फूल एक हार के।
देखती है यह जमीन, आसमान देखता।
अनेकता ... ... ॥१॥

एक देश के हैं अंग, रंग भिन्न-भिन्न हैं।
एक जननी भारती के कोटि सुत अभिन्न हैं।
कोटि जीव-बालकों में ब्रह्म एक खेलता।
अनेकता ... ... ॥२॥

कर्म हैं बंटे हुए, सर एक मूल मर्म है।
राष्ट्रभक्ति ही हमारा एकमात्र धर्म है।
कोटि कंठ देश का एक स्वर विखेरता।
अनेकता ... ... ॥३॥

एक लक्ष्य एक प्राणपण से हम जुटे हुए।
एक भारती की अर्चना में हम लगे हुए।
कोटि-कोटि साधकों का एक राष्ट्र-देवता।
अनेकता ... ... ॥४॥